बिरला शिशु विहार में शिक्षण पद्धति में कहानी का महत्व पर कार्यशाला

पिलानी (मृदुल पत्रिका)। शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) हेतु शिक्षण पद्धति में कहानी का महत्व विषय पर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, अजमेर द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन मंगलवार को बिरला शिशु विहार प्रांगण में किया गया। बिरला शिक्षण संस्थान के विद्यालयों के साथ - साथ अन्य विद्यालयों के 60 शिक्षकों ने भाग लिया।

कार्यशाला की प्रवक्ता सुश्री भावना छिब्बर, प्रिंसिपल लैबर्नम पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम, हरियाणा व सुश्री नीरज बेनीवाल, प्रिंसिपल एस.जे. पब्लिक स्कूल, जयपुर थी। विद्यालय के प्राचार्य पवन वशिष्ठ द्वारा प्रवक्ताओं को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर बिरला शिक्षण संस्थान के डिप्टी डायरेक्टर (फाइनेंस) डॉ. जी. एस. गौड़ उपस्थित थे।

कार्यशाला की समन्यवक श्री विनीत पांडेय द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत कर कार्यशाला का शुभारंभ करवाया।कार्यशाला की प्रवक्ता सुश्री भावना छिब्बर ने सत्र में बताया की कहानी सुनाना एक शक्तिशाली शैक्षणिक उपकरण है। सीधे शब्दों में कहें तो कहानी कहने का मतलब जानकारी को जैविक रूप में पहुंचाना है। शिक्षक, कहानीकार और कलाकार का उद्देश्य एक ही है- अपने दर्शकों को सूचित करना, संलग्न करना और उनका मनोरंजन करना। वे सभी अपने संदेश को यथासंभव सबसे सम्मोहक और उत्तेजक तरीके से संप्रेषित करना चाहते हैं। आखरिकार, जैसा कि लेखक गेल गुडविन कहते हैं, अच्छा शिक्षण एक-चौथाई तैयारी और तीन-चौथाई थिएटर है! कहानी सुनाना दर्शकों को एक अनूठे तरीके से बांधे रखता है। तो फिर, कहानी सुनाना एक अच्छे शिक्षक के प्रदर्शन में एक और उपकरण है। यह न केवल शिक्षक के लिए सूचना को व्यवस्थित करने का एक शक्तिशाली उपकरण है, बल्कि छात्रों के लिए जो कुछ उन्होंने सीखा है उसे व्यक्त करने का एक गतिशील साधन भी है। कहानी कहने का जादू कक्षा में माहौल को बदल देता है और इस तरह सीखने के माहौल को बढ़ाता है। कहानियाँ दिमाग को खोलने का काम करती हैं ताकि सुनने वाला चीजों को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाए। संक्षेप में, कहानियाँ दिल को आकर्षित करती हैं, और, एक बार दिल जीत लेने के बाद, दिमाग सीखने के लिए खुला रहता है।

वही कार्यशाला की दूसरी प्रवक्ता सुश्री नीरज बेनीवाल ने सत्र में बताया की कहानियाँ छात्रों की जीवंत कल्पना को बढ़ावा देती हैं। जब छात्र कोई कहानी सुनते हैं, तो वे मन में चित्र बनाते हैं, अनुमान और भविष्यवाणियाँ करते हैं और कमियों को भरते हैं। वे एक तरह से कहानी बनाने में शामिल हो जाते हैं, इस प्रकार कथा के साथ एक रिश्ता बनाते हैं। जब कहानी के रूप में पैक किया जाता है, तो जानकारी का मौखिक वितरण लिखित भाषा की तुलना में अधिक भागीदारी को बढ़ावा देता है।

विभिन्न शिक्षण शैलियों के लिए अपील करने के लिए, तथ्य और सिद्धांत की पारंपरिक प्रस्तुति को पार करना आवश्यक है। कहानियाँ ठोस हैं; वे अमूर्त, गैर-रचनात्मक तरीकों की तुलना में अवधारणाओं का बेहतर उदाहरण देते हैं। कहानी सुनाना सिखाने से प्रस्तुतिकरण, संचार और लेखन कौशल भी सिखाए जाते हैं। निर्देश और मूल्यांकन की एक विधि के रूप में कहानी कहने का उपयोग शैक्षिक उद्देश्यों का समर्थन करता है। इनमें शामिल हैं- मौखिक कौशल में सुधार, आत्मविश्वास हासिल करना, घटनाओं के अर्थ की खोज करना, भाषा और कहानियों के प्रति प्रेम विकसित करना, संज्ञानात्मक सोच के उच्च स्तर को प्रोत्साहित करना, कथन की अधिक गहन समझ हासिल करना, कल्पनाशील कौशल में सुधार करना, कहानियों की पारंपरिक संरचना और परंपराओं को आत्मसात करना, लेखन कौशल में सुधार, कहानियों के निर्माण में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना। कहानी सुनाना शिक्षक के लिए एक प्रभावी उपकरण है क्योंकि यह संचार का एक शक्तिशाली रूप है। इससे विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को लाभ होता है। छात्र कहानियाँ सुनकर सीखते हैं क्योंकि वे बारीकी से ध्यान देते हैं, संदेश को अधिक तत्परता से समझते हैं, और मुख्य बिंदुओं को लंबे समय तक याद रखते हैं। शिक्षक बेहतर शिक्षक बनते हैं क्योंकि प्रभावी ढंग से कहानी सुनाने में सक्षम होने से एक नेता के रूप में शिक्षक की धारणा बढ़ती है। एक शिक्षक जो निपुणता से कहानी सुना सकता है, उसके व्यक्तित्व में एक सुगम्य, पसंद करने योग्य और मानवीय पक्ष प्रकट होता है। इससे शिक्षक की स्थिति को कम खतरा बनाकर शिक्षक और छात्रों के बीच की दूरी को कम करने में मदद मिलती है। कार्यशाला के समापन पर प्राचर्य पवन वशिष्ठ ने दोनों प्रवक्ताओं को समृति चिन्ह भेंटकर कर उनका सामान किया और कार्यशाला हेतु उनका धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए कार्यशाला समन्यवक विनीत पांडेय व विशेष सहयोग के लिए विजय तोला का आभार व्यक्त किया।